IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बदलते परिवेश में महिला शिक्षा एवं सशक्तिकरण का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. सुनीता शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र, मां शीतला देवी त्रिजुगी नारायन महिला महाविद्यालय अरौल , कानपुर

साराशं — वर्तमान युग में चाहे पुरूष हो या महिला प्रत्येक के लिए शिक्षा बहुत जरूरी है। आधुनिक युग विज्ञान और सोशल मीडिया का युग है जिसमें अशिक्षित होना अभिशाप के समान है। महिला शिक्षा एवं सशक्तिकरण, सामाजिक विकास की प्रमुख प्रकिया है। जो महिलाओं को सामाजिक ,आर्थिक एवं राजनीतिक विकास में भाग लेने में सक्षम बनाती है। महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण समाज में पारम्परिक रूप से वंचित महिलाओं की आर्थिक ,सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति में अनिवार्य रूप से उत्थान की प्रक्रिया है। महिलाएं देश के विकास और परिवर्तन की प्रकिया में सक्रिय भागीदार है। भारत में महिलाएं अपेक्षाकृत अशक्त है । सरकार द्वारा किये गये प्रयासों के बावजूद भी पुरूषों की तुलना में असमानता के शिकार है। महिलाओं द्वारा असमान लैंगिक मापदण्डों की स्वीकृति अभी भी समाज में प्रचलित है। दुनिया तरक्की कर रही है लेकिन महिला उत्पीड़न जारी है। महिलाओं का उत्पीड़न पूरे इतिहास में एक ध्रुवीकरण का मुद्दा है। उन्हें बुनियादी संसाधनो से लेकर आस्तित्व तक लगभग हर चीज के लिए संघर्ष करना पड़ता है। महिला अभी भी हीन भावना से ग्रसित है क्यों कि लोग गहरी जड़े जमाऐ हुए सांस्कृतिक, लैंगिक और सामाजिक मापदण्डो का पुरूष प्रधान समाज में महिलाओं के समानता को स्वीकार नहीं करते। हालांकि यह भी सच है कि भारतीय महिलाओं ने शिक्षा और रोजगार जैसी कुछ क्षेत्रों में काफी प्रगति की है। यह अध्ययन विशुद्ध रूप से द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। ा प्रस्तुत पत्र में वर्तमान परिवेश में महिला शिक्षा और सशक्तिकरण के अध्ययन का प्रयास किया गया है। महिलाओं को वास्तविक अर्थ में सशक्त बनाने में शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए महिला शिक्षा आवश्यक है जिससे उनकी स्थिति में सुधार हो सके ताकि वे बदलाव के लिए उत्प्रेरक का कार्य कर सकें।

शब्द कोश— समाज , महिला, शिक्षा, विकास, साक्षरता, सशक्तिकरण, समाजिकता ,योजनाएं।

प्रस्तावना—

किसी भी समाज में शिक्षा का स्तर और साक्षरता दर उस समाज के विकास के संकेतक है। शिक्षा मनुष्यों को सशक्त बनाने का एक साधन है, विशेष रूप से महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण साधनों मे से एक है। महिलाओं का सशक्तिकरण समृद्धि, लैंगिक समानता और सतत् विकास के लिए शिक्षा का होना अनिवार्य है। भारत में स्वतंत्रता के बाद सामाजिक, आर्थिक, एवं राजनीतिक तथा राष्ट्र के विकास के लिए अपनायी गई रणनीति के कारण महिलाओं की स्थिति में तेजी से सुधार हुआ है। शिक्षा ही वह उपकरण है जिससे समाज में महिला अपनी सशक्त ,उपयोगी और समान भूमिका की अनुभूति करा सकती है। महिला शिक्षित होकर स्वयं लाभान्वित नहीं होती है बल्कि पूरा समाज लाभान्वित होता है। क्योंकि शिक्षित महिला से उसका परिवार तथा भावी पीढ़ी भी लाभान्वित होती है। जिससे स्वस्थ्य समाज का निर्माण होता है। व्यक्ति और परिवार समाज निर्माण के आधार हैं। शिक्षा विवेकपूर्ण दृष्टिकोण के विकास तथा किसी प्रकार के कौशल की प्राप्ति के लिए पूर्णतया आवश्यक है। महिलाओं में स्वयं निर्णय लेने की क्षमता सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षा का इन पहलूओं में सार्थक और सकारात्मक सहसम्बन्ध है। समाज में मनुष्य के सुखद जीवन का मजबूत आधारशिला तैयार करने में शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है। किसी भी समाज या राष्ट्र की प्रगति के लिए महिला शिक्षा का विशेष महत्व है। समाज में महिला का निम्न स्तरीय विकास , सामाजिक ,आर्थिक, राजनीतिक स्तर पर निम्न भागीदारी तथा कुशलता का निम्न स्तर, निम्न शैक्षिक स्तर का सीधा प्रभाव है। महिलाओं की वास्तविक स्थिति से व्यक्ति परिवार समाज एवं राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक स्थिति प्रभावित होती है। समाज में शिक्षा प्रणाली को आज के तेजी से बदलते समय में नवाचार के माध्यम से सुधारना बेहद जरूरी हो गया है। केवल पाठ्यक्रम को पढ़ाना ही शिक्षा का उद्देश्य नहीं होना चाहिए, बल्कि विद्यार्थियों में रचनात्मकता, समस्या समाधान की क्षमता और स्वतंत्र सोच को विकसित करना भी शामिल होना चाहिए। नवीनतम तकनीकों और पद्धतियों को शिक्षा प्रणाली में शामिल करना आवश्यक है। जिससे एक मजबूत, साक्षर और उन्नत समाज की नींव रखी जा सके। महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य है ''महलिाओं की छिपी हुई उन गुणों, शक्तियों प्रतिभाओं को विकसित करना है जिनको व्यवहार में लाकर वे अपने विकास की ओर स्वयं कदम बढ़ा सके, यह कार्य केवल शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। सशक्तिकरण उन लोगों के पक्ष में शक्ति संबंधों को बदलने की प्रक्रिया है जो एक पदानुक्रम के निचले स्तर पर हैं।

उत्पादकता स्तर, महिलाओं के व्यक्तिगत विकल्पों और महिला समूहों के सामूहिक योगदान को महिला सशक्तिकरण बढ़ाएगा। जीवन के सभी क्षेत्रों में अधिकार और दर्जा पश्चिमी समाजों में महिलाओं को पुरूषों के बराबर प्राप्त है। जबकि भारतीय समाज में आज भी सभी जगहों पर उन्हें पुरूषों के बराबर नहीं माना जाता है। और लैंगिक अक्षमताएं एवं भेदभाव पाया जाता है।

भारत में महिला षिक्षा का इतिहास–

महिला शिक्षा का विकास यात्रा प्राचीन वैदिक काल से जुड़ा हुआ है। उल्लेखनीय है कि वैदिक काल में लगभग 3000 से अधिक वर्ष पूर्व समाज में महिलाओं को एक प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त था। और उन्हें पुरूषों के समान समाज का एक महत्वपूर्ण अंग समझा जाता था। वैदिक काल के स्त्री शक्ति सिद्धान्त के अनुसार– महिलाओं का पुजन देवी के रूप में शुरू हुई जैसे शिक्षा की देवी सरस्वती। वैदिक साहित्य में अध्ययनरत् महिलाओं का उल्लेख किया गया है। वैदिक काल के अनुसार –लड़के और लड़कियॉ दोनों का एक साथ उचित देखभाल और प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

ब्रिटिश काल में दक्षिण भारत के तिरूनेलवेली में वर्ष 1821 में पहला आल गर्ल्स बोर्डिंग स्कूल के स्थापित किया गया था। दक्षिण भारत में वर्ष 1840 तक स्कॉटिश चर्च सोसाइटी द्वारा निर्मित छः स्कूल मौजूद थे। जिसमें कुल 200 लड़कियों का नामांकन कराया गया था। पश्चिम भारत में ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी सावित्री बाई फुले ने महिला शिक्षा के लिए कार्य किये और वर्ष 1848 में पुणे में गर्ल्स स्कूल की शुरूआत करने वाले अग्रणी थे। मद्रास मिशनरियों ने 1850 तक लगभग 8000से अधिक लड़कियों का नामांकन कराया था। महिलाओं की शिक्षा एवं रोजगार की आवश्यकता को 1854 में ईस्ट इंडिया कम्पनी के कार्यक्रम वुड डिस्पैच ने स्वीकार किया। बेथ्यून महिला कालेज वर्तमान में एशिया का सबसे पुराना कालेज है जिसकी स्थपना वर्ष 1879 में हुआ। गौरतलब है कि महिलाओं की समग्र साक्षरता दर वर्ष 1882 में 0.2 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 1947 में 6 प्रतिशत हो गई। 1917 में भारतीय महिला संघ की स्थापना हुई थी। इस समय गॉधी जी व अम्बेडकर जी द्वारा महिलाओं को समाज की मुख्य धारा में लाने का प्रयास सराहनीय रूप से देखा जाता है।

स्वतंत्र भारत के प्रारम्भिक समय में महिलाओं की साक्षरता दर में कमी रही थी। जिसे भारत सरकार द्वारा गंभीरता से लिया गया। और महिला शिक्षा दर पर सरकार ने वर्ष 1958 में एक राष्ट्रीय समिति का गठन किया जिसकी सभी सिफारिशें स्वीकार कर ली गयी । इन सिफारिशों का सार पुरूष शिक्षा के समानान्तर ही महिला शिक्षा को पहुॅचाना था। लड़के और लड़कियों के लिए एक समान पाठ्यक्रम हो इसी विषय पर गठित एक समिति ने वर्ष 1959 में विभिन्न चरणों में लागू करने की सिफारिशें की। महिला शिक्षा के विषय में वर्ष 1964 में स्थापित शिक्षा आयोग ने बड़े पैमाने पर बात की और भारत सरकार ने वर्ष 1968 में एक राष्ट्रीय नीति विकसित करने की सिफारिश की।

षोध का उद्देष्य–

- वर्तमान परिवेश में महिला शिक्षा के महत्व का विश्लेषण करना।
- वर्तमान परिवेश में महिला शिक्षा के प्रति जागरूकता का विश्लेषण करना।
- महिला सशक्तिकरण की ओर बढ़ावे का विश्लेषण करना।
- महिला शिक्षा के मार्ग में आ रही बाधाओं का विश्लेषण करना।
- महिलाओं की परिस्थितियों में बदलाव पर शिक्षा के प्रभाव का विश्लेषण करना।
- महिला सशक्तिकरण के लाभ के लिए उचित सरकारी योजनाएं का विश्लेषण करना।

किया विधि–

इस शोध का अध्ययन विधि मूल रूप से वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। जिसमें महिला शिक्षा और सशक्तिकरण का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। वर्णनात्मक शोध विधि का उद्देश्य समस्या के संबंध में पूर्ण, यथार्थ एवं विस्तृत तथ्यों की जानकारी प्राप्त करना है। अध्ययन की आवश्यकता के अनुसार उपयोग किया गया डेटा विशुद्ध रूप से द्वितीयक ऑकड़ों पर आधारित प्रमाणित एवं विश्वसनीय स्रोत राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की शोध, पत्र, पत्रिकाओं, लेखों, जनगणना से लिया गया है।

महिला षिक्षा–

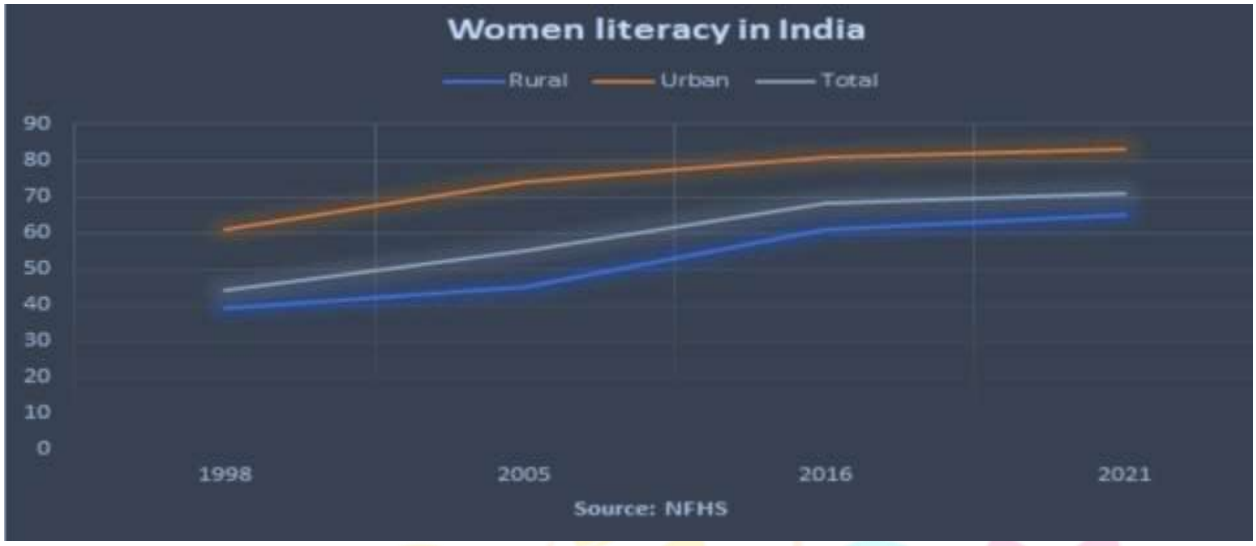

वर्तमान में महिला शिक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है। राष्ट की सामाजिक, आर्थिक विकास में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। समाज के दो पहियों की तरह महिला और पुरूष समान रूप से कार्य करते हैं। इसलिए समाज के विकास के लिए आवश्यक है कि पुरूष के साथ–साथ महिलाओं को भी शिक्षा सहित अन्य सभी क्षेत्रों में भी समान अवसर प्रदान किये जायें जिससे समाज की प्रगति सम्भव हो सके। महिला शिक्षा एक महिला और शिक्षा को जोड़ने वाली अवधारणा है। इसका एक रूप शिक्षा में महलाओं को पुरूषों की तरह शामिल करने से संबंधित है, दूसरा यह महिलाओं द्वारा बनायी गयी विशेष शिक्षा पद्यति को संदर्भित करता है। महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने से समुदाय, राष्ट् और दुनिया में बदलाव आता है। शिक्षित महिलाओं में स्वस्थ एवं संतुष्ट जीवन जीने की संभावना अधिक होती है। महिलाएं समाज में असमानता को कम करते हुए अर्थब्यवस्था को बढ़ावा देती है। वे अपने परिवार का बेहतर भविष्य बनाती है। तथा उन निर्णयों में भाग लेती हैं जो सीधे तौर पर उन्हें प्रभावित करते है।

महिला सषक्तिकरण और बाधाएं–

आठ मार्च को पूरे विश्व में महिला दिवस मनाया जाता है। हरिवंश परसाई जी के व्यंग्य की पंक्ति है कि ''दिवस कमजोरों के मनाये जाते है मजबूत लोगों के नहीं।'' सशक्त होने का आशय केवल घर से बाहर निकलकर नौकरी करना या पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर चलना भर नहीं है। यहां पर सशक्त होने का आशय उनके निर्णय ले सकने की क्षमता का आधार है। जिससे कि वह अपना निर्णय स्वयं ले सके और किसी पर निर्भर न रहें। महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त होना उनके लिए बहुत आवश्यक है। उनका आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना ही सशकितकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू है। नारी शब्द का अर्थ है गुण प्रधान स्त्री व महिला। भारत में महिला सशक्त होने की दिशा में नारीवादी आन्दोलन ने भी मुख्य भूमिका निभाई है। महिलाएं दुनिया की आधी आबादी है। सृष्टि के निर्माण में उनका भी उतना ही सहयोग है जितना कि पुरूष का। कहीं न कहीं आज भी इस पितृसतात्मक समाज में स्त्री को हीन दर्जा प्राप्त है। यह समाज ही उसके लिए जीवन के नियम और स्वरूप को गठित करता है। वर्तमान समय में अनेक क्षेत्रों में महिलाओं के सशक्त होने के तमाम पहलू और उसमें आने वाली चुनौतियॉ भी कम नहीं है। महिला सशक्तिकरण का राष्ट्रीय उद्देश्य महिलाओं का प्रगति और उनमें आत्मविश्वास का संचार करना है। महिला सशक्तिकरण देश के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। महिलाओं को अनेक ऐसी बाधाएं जैसे दहेज प्रथा, कन्या भ्रुण हत्या, घरेलू हिंसा, महिला और पुरूष को बराबर मजदूरी नहीं मिलना, यौन शोषण आदि का सामना करना पड़ता है। जो सशक्तिकरण में मुख्य बाधा है।

महिला षिक्षा एवं सषक्तिकरण की आवष्यकता –

"आप किसी राष्ट् में महिलाओं की स्थिति देखकर उस राष्ट्र के हालात बता सकते हैं।''
–जवाहर लाल नेहरू

महिलाओं की भूमिका को किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक विकास में नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। महिलाओं को शिक्षित करना भारत में कई सामाजिक बुराइयों जैसे – दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या और कार्यस्थल पर उत्पीड़न आदि को दूर करने में सहायक हो सकता है। तथा अधिक से अधिक महिलाएं श्रम कार्यों में हिस्सा ले पायेंगी जिससे देश के आर्थिक शक्ति में विकास होगा। महिलाओं को शिक्षित होने से बच्चों के पालन–पोषण और आहार को भी मजबूत आधार मिलता है। महिला शिक्षा किसी भी देश के विकास के लिए बहुत जरूरी है। जिसके लिए महिलाओं और लड़कियों को उचित संसाधन उपलब्ध कराना आवश्यक है। शिक्षित महिलाएं अपने परिवार के विकास के साथ ही देश के विकास में अहम भूमिका निभाती है। महिला की शिक्षा समाज में असमानता को दूर करने के साथ ही अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाती है। महिलाओं के लिए शिक्षा का अर्थ स्कूल तक पहुॅच से कही ज्यादा है। जो उन्हें अपनी क्षमता को पूरा करने का अवसर देता है।

महिला को सशक्त बनाने के लिए भारत सरकार अनेक पहल किये गये। लेकिन समाज के हर स्तर पर महिलाओं के साथ भेद–भाव किया किया जाता है और इन्हें हाशिए पर रखा जाता है। चाहे वह सामाजिक भागीदारी हो या आर्थिक ,राजनीतिक भागीदारी हो याा शिक्षा तक पहुॅच या प्रजनन देखभाल। वर्तमान में अनेक महिलाएं सेवाओं और अन्य गतिविधियों में लगी हुई है। कार्य स्थल पर उत्पीड़न, लड़कियों का अपहरण, दहेज प्रताड़ना इत्यादि के न जाने कितने मामले है। इस कारणों से महिलाओं को अपनी सुरक्षा, और अपनी पवित्रता एवं गरिमा को सुरक्षित रखने के लिए सशक्तिकरण की आवश्यकता होती है। महिला शिक्षा उन्हें सशक्त बनाने में बहुत महत्वपूर्ण है। ग्रामीण क्षत्रों में आवश्यक रूप से महिलाओं में शिक्षा और सशक्तिकरण को बढ़ाने की जरूरत है जिससे वे सशक्त ,शक्तिशाली और सम्मानित बन सकें।

महिला सषक्तिकरण के लिए सरकारी योजनाएं–

वर्तमान में भारत सरकार ने महिला सशक्तिकरण के लिए अनेक योजनाओं को लागू किया है। बिभिन्न गरीबी उन्मूलन और ग्रामीण विकास कार्यक्रम में महिला सशक्तिकरण के लिए विशेष घटक है। ये योजनाएं भारत सरकार के बिभिन्न विभागों एवं मंत्रालयों द्वारा संचालित किये जाते हैं। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं–एस बी आई की श्री सखी योजना, महिला समिति योजना, कामकाजी महिला मंच, उज्जवला ''2007'',महिला समृद्धि योजना, कामकाजी महिलाओं के लिए छात्रावास , धन लक्ष्मी ''2008'', बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ योजना, मिशन शक्ति, स्वावलंबन, सक्षम, सबला ,नवा बिहार योजना सुकन्या समृद्धि योजना, महिला सम्मान बचत पत्र योजना, महिला सशक्तिकरण योजना इत्यादि अनेक योजनाएं महिला सशक्तिकरण के लिए है। भारत सरकार ने 2001 को महिलाओं के सशक्तिकरण (स्वशक्ति) वर्ष के रूप में घोषित किया है। राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण नीति 2001 में पारित की गयी थी। इसके अलावा महिला सशक्तिकरण के लिए अधिकार भी दिये जिसमें समान वेतन का अधिकार, कार्य –स्थल में उत्पीड़न के खिलाफ कानून, सम्पति पर अधिकार, कन्याभ्रुण हत्या के खिलाफ अीधकार, गरिमा और शालिनता के लिए अधिकार इत्यादि अनेक अधिकार है। तथा भारतीय संबिधान ने अपने विभिन्न अनुच्छेदों के माध्यम से महिलाओं के लिए समान अधिकारों के द्वारा महिलाओं में शिक्षा और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने का प्रावधान दिया गया।

भारत में महिला षिक्षा की वर्तमान स्थिति–

महिला और पुरूष किसी भी समाज को प्रगति की ओर ले जाने में समान रूप से समाज के दो पहिए की तरह कार्य करते है। इसलिए पुरूष के साथ–साथ महिलाओं की भूमिका को किसी भी राष्ट्र के सामाजिक ,आर्थिक और राजनीतिक विकास में अनदेखी नहीं किया जा सकता है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार देश में महिला साक्षरता दर मात्र 65.46 फीसदी थी । जबकि पुरूष साक्षरता दर 82.14 फीसदी थी। उल्लेखनीय है कि भारत की महिला साक्षरता दर विश्व के औसत 79.7 से काफी कम है। और ऐसे ही देश की कुल साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत से भी काफी कम है। देश में आजादी के बाद से साक्षरता दर में तेजी से बृद्धि हुई है। जहॉ 1947 में कुल साक्षरता मात्र 18 प्रतिशत थी, वह बढ़कर 2011 में 74.04 प्रतिशत हो गयी थी। भारत की जनसंख्या की अनुपात 1000 पुरूषों पर 943 महिलाएं थी। भारत में महिलाओं की वर्तमान स्थिति अपने पुरूष समकक्षों के बराबर होना अभी भी दूर दृष्टि के समान है। आर्थिक सर्वेक्षण शिक्षा एवं कौशल विकास तक बढ़ती पहुॅच के चलते महिला श्रमशक्ति भागीदारी दर 2017–18 में 23.3 प्रतिशत से बढ़कर 2022–23 में 37 प्रतिशत हो गयी है। वित्त वर्ष 2024–25 में लैंगिक बजट पर सरकार का कुल व्यय का 6.5 हो चुका है। पिछले दो दशको का यह औसत 4.8 रहा है।

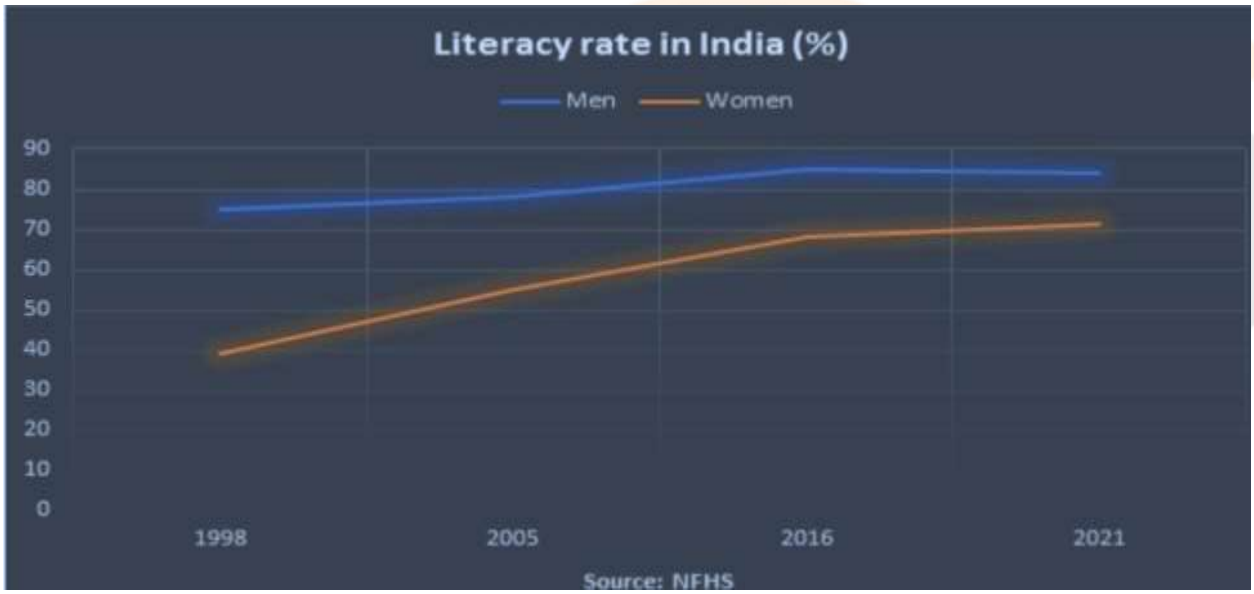

भारतीय महिलाओं की साक्षरता दरों में पिछले कुछ वर्षों में बृद्धि हुई है। विश्व बैंक इण्डिया की रिपोर्ट के अनुसार– भारत की स्वतंत्रता के समय 11 में से केवल एक लड़की साक्षर थी जो लगभग नौ प्रतिशत थी और वर्तमान में महिलाओं की साक्षरता दर 77 प्रतिशत हो गई है जबकि भारत की पुरूष साक्षरता दर 84 प्रतिशत है । 2010 में भारत में महिला साक्षरता दर अच्छी रही है। 2010 में महिला साक्षरता दर 80.35 प्रतिशत थी। यह दर समय के साथ बढ़ती गयी। 2010–2021 के बीच भारत में महिला साक्षरता दर में 14.40 प्रतिशत की बृद्धि हुई है। 2021 में यह 91.95 थी। साल दर साल आधार पर 2021 में साक्षरता दर में 0.6 प्रतिशत की बृद्धि हुई। कुछ सदियों में भारत में महिलाओं की स्थिति ने कई बड़े बदलाओं का सामना किया है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक महिलाओं का इतिहास काफी गतिशील रहा है। आधुनिक भारत में

महिलाएं राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री लोकसभा अध्ययक्ष, प्रतिपक्ष की नेता आदि जैसे शीर्ष पदों पर आसीन हुई है। वर्तमान परिवश में महिलाएं अब सभी तरह की गतिविधियों जैसे कि शिक्षा विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कला संस्कृति, मीडिया राजनीति, सेवा क्षेत्र में हिस्सा ले रही है। महिलाओं में सशक्तिकरण के अनेकों तरीके है जिसमें हर क्षेत्र में शिक्षा प्राप्त करना ,निर्णय लेने में महिलाओं का नियंत्रण शामिल करना, संसाधनों तक महिलाओं की पहुँच और नियंत्रण में बदलाव, इसके अलावा समाज को महिला शब्द के प्रति अपनी मानसिकता बदलनी चाहिए।

सुझाव–

समाज में महिला शिक्षा के लाभों को बढ़ाने की आवश्यकता है। लिंग भेदभाव को रोकने की शक्त कारवाही होनी चाहिए। लिंग से संबंधित अपराधों के लिए निश्चित रूप से दण्ड का प्रावधान होना चाहिए। समाज में प्रत्येक व्यक्ति को अपने बच्चों को यह शिक्षा देनी चाहिए कि लड़के और लड़कियां समान है और उनसे समान रूप से व्यवहार करना चाहिए। महिलाओं को बेहतरीन निर्णय लेने में शिक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण है इसलिए महिला शिक्षा आवश्यक है, जिससे महिलाएं सशक्त हो सकें और देश के प्रत्येक क्षेत्र में अपना योगदान दे सकें। महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य महिलाओं की सामाजिक ,आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक शक्ति में बृद्धि से है। महिलाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव समय की सबसे बड़ी जरूरत है। महिलाओं को विकास की मुख्य धाराओं में शामिल करना ही सशक्तिकरण का सबसे अच्छा तरीका है। महिला शिक्षा और सशक्तिकरण का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सरकार के पहल के साथ ही प्रत्येक परिवार और समाज को भी ऐसी पहल करनी चाहिए जिससे महिलाएं शिक्षित और सशक्त बन सकें। दुनिया की आधी आबादी की शिक्षा एवं सशक्तिकरण को स्वीकारते हुए सरकार के साथ–साथ समाज का भी यह प्रयास होना चाहिए की लड़कियों एवं महिलाओं को इतना सशक्त बनाया जाय कि वे स्वयं के साथ समाज को भी उचित दिशा और दशा प्रदान कर सकें। समाज में महिलाओं को स्वयं सशक्त के लिए आगे बढ़ना होगा। महिला सशक्तिकरण तभी सम्भव होगा जब महिलाएं साथ दें और सशक्त बनानें में एक दूसरे की मदद करें।

निष्कर्ष–

अध्ययन से हमें निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि किसी भी देश के विकास के लिए महिला शिक्षा बहुत आवश्यक है। महिला शिक्षा और सशक्तिकरण के लिए लड़कियों और महिलाओं को उवित शिक्षा मुहैया कराना जरूरी हैं। वे अपने परिवार के विकास में अहम भूमिका निभाती है। इसके साथ ही महिलाओं में अपने देश के आर्थिक विकास में योगदान देने की क्षमता होती है। वर्तमान परिवेश में महिलाओं की स्थिति उतनी अच्छी नहीं है जितनी होनी चाहिए। आज भी महिलाएं समाज में हिंसा, उत्पीड़न, अत्याचार, शोषाण और असमानता की शिकार हैं। महिलाओं के अधिकारों एवं बुनियादी जरूरतों को समायोजित करने के लिऐ आवश्यक कदम उठाने चाहिए। हालांकि वर्तमान समय में हमारे देश की महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। उनकी पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षिक स्थिति में परिवर्तन आया है। महिलाओं की स्थिति सुधारने और उनका प्रगतिशील विकास करने के लिए भारत सरकार के अनेक योजनाओं के लाभ प्राप्ति के साथ ही समाज के प्रत्येक व्यक्ति को सोचना होगा और उसके लिए ठोस कदम उठाने होंगे जिससे वे शिक्षित और सशक्त बन सकें। बदलते परिवेश में जैसे–जैसे महिलाओं में शिक्षा का रूझान बढ़ा है, शिक्षित हुई है वे उसी प्रकार से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में भी सुदृढ़ हुई हैं। तथा आत्मनिर्भर बनीं है। महिलाओं को शिक्षित और सशक्त बनाने में समाज की भूमिका महत्वपूर्ण है।

संदर्भ सूची–

1. मकोल नीलम, संदीप शर्मा : सामाजिक विकास में शिक्षित महिलाओं का योगदान, कुरूक्षेत्र, सितम्बर 2006।
2. अल्तेकर, डॉ0 अनन्त सदाशिव : ''प्राचीन भारतीय शिक्षण'',नन्द किशोर एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी 1986 पृष्ठ 155
3. लवानिया, एम. एम.1989, ''समाजशास्त्रीय अनुसंधान कातर्क एवंविधियॉ'',रिसर्च पब्लिकेशन जयपुर।
4. व्यास डॉ0 मिनाक्षी,नारी चेतना और सामाजिक विधान ,रोशनी पब्लिकेशन ,कानपुर 2008 ।
5. श्रीवास्तव, सुधारानी 1999,''भारत में महिलाओं की वैधानिक स्थिति'',कॉमनवेल्थस पब्लिकेशन,नई दिल्ल।
6. कनिटकर मुकुल ''भारत में महिला शिक्षा, समाज व सरकार की भूमिका'', योजना सितम्बर 2016।
7. तिवारी, आर. पी.1999,''भारतीय नारीः वर्तमान समस्याएं एवं समाधान'',नई दिल्ली।
8. शर्मा डॉ0 शीतल : ''भारत में महिला सशक्तिकरण एवं योजनाएं''2017
9. इंटरनेट ,ग्लोबल डाटा एक्सप्लोर
10. www. Google.com लाइवमिंट, भारत में महिला सशक्तिकरण का महत्व।
11. https:// www.knowindia.india.gov.in

12. https://www.jagran.com

13. https:// www.hi.wikipedia.org
14. www.all studyjournal.com
15. https:www.drishtiias.com
16. समाचार पत्र : दैनिक जागरण, अमर उजाला, हिन्दुस्तान।
17. www.Google.com: Source:NEHS

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation